MR. SPEAKER: The question is:

"That this House do agree with the Second Report of the Business Advisory Committee presented to the House on the 21st June, 1977."

The motion was adopted.

12.16 hrs.

CARDAMOM (AMENDMENT) BILL*

THE MINISTER OF COMMERCE AND CIVIL SUPPLIES AND CO-OPERATION (SHRI MOHAN DHARIA): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill to amend the Cardamom Act, 1965.

MR. SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to amend the Cardamom Act, 1965."

The motion was adopted.

SHRI MOHAN DHARIA: I introduce the Bill.

12.17 hrs.

YOGA UNDERTAKINGS (TAKING OVER MANAGEMENT) BILL*

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री राजनारायण) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि दो योग सोसाइटियों के उपक्रमों का लोकहित में और उनका समुचित प्रबन्ध सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सीमित अवधि के लिए प्रबन्ध-ग्रहण का तथा उनसे संबंधित या उनके आनुषंगिक विषयों का उपबन्ध करने वाले विधेयक को पुर:स्थापित करने की अनुमति दी जाय ।

MR. SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for the taking over of the management of the undertakings of the two Yoga Societies for a limited period in the public interest and in order to secure the proper management thereof and for matters connected therewith or incidental thereto."

The motion was adopted.

श्री राजनारायण : मैं विधेयक को पुर:-स्थापित करता हूं ।

17.18 hrs.

STATEMENT *RE.* YOGA UNDERTAKINGS (TAKING OVER OF MANAGEMENT) ORDINANCE

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री राजनारायण) : श्रीमन्, दिल्ली में 1958 से विश्वायतन योगाश्रम नामक एक पंजीकृत संस्था खोली गई थी । इस सोसाइटी के उद्देश्यों में अन्य बातों के..... **व्यवधान)**.....देखिए, जरा हल्ला न कीजिए । इसकी दोनों प्रथाएं हैं । टेबल पर भी भी रखा जा सकता है और अगर कुछ कहना चाहें तो कहा भी जा सकता है । अगर विरोधी दल के लोग विरोध करना चाहें तो वे विरोध भी कर सकते हैं कि इसकी अनुमति नहीं देंगे । इसलिए आप यह नहीं कह सकते कि यह क्या प्रथा है ? पार्लियामेंटरी पद्धति हमें सिखाने की कृपा न करें ।

मैं योग उपक्रम (प्रबन्ध-ग्रहण) अध्यादेश, 1977 द्वारा तुरन्त विधान बनाने के कारण बताने वाला एक व्याख्यात्मक विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूं ।

RE. CALLING ATTENTION

SHRI VASANT SATHE (Akola): What about the calling attention?

---

*Published in Gazette of India Extraordinary, Part II, section 2, dated 22-6-77.

]Introduced with the recommendation of the Vice-President acting as President.

MR. SPEAKER: The Minister wants it to be taken up at 2 o'clock. He is not yet ready.

SHRI VASANT SATHE: The practice has been to give us the statement in advance so that we may be ready to participate better.

MR. SPEAKER: Mr. Shanti Bhushan, have you any information to give now?

THE MINISTER OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS (SHRI SHANTI BHUSHAN): I am making a statement at 2 o'clock.

MR. SPEAKER: You are not circulating it?

SHRI VASANT SATHE: We must go by the practice of the House, namely, a copy of the statement is given, at least half an hour earlier, to the member who has given the notice so that he may be ready to participate in the discussion.

MR. SPEAKER: Because it is not ready, they are asking for time. They are getting the information or something is happening, in between. Therefore, they have asked for time. If it is not ready, how can they circulate it?

SHRI VASANT SATHE: I do not mind its being taken up at 2 o'clock. But by 1.30 let me have a copy of the statement.

12.20 hrs.

GENERAL BUDGET 1977-78—GENERAL DISCUSSION—*Contd.*

MR. SPEAKER: Shri Satyanarayan Rao was speaking yesterday. He may continue.

श्री एम० सत्यनारायण राव (करीमनगर) : अध्यक्ष जी, कल एक मिनट में मैंने जो कुछ भी कहा था, बजट के मुताल्लिक कहा था। जनता पार्टी के पावर में आने के बाद यह पहला बजट है—जनता यह उम्मीद कर रही थी कि यह बहुत डाइनेमिक बजट होगा, बहुत अच्छा बजट होगा, जिससे उनकी समस्याओं का समाधान हो सकेगा—लेकिन दुख है कि ऐसा कुछ नहीं हुआ। जनता पर्टी में जितनी भी पार्टियां मिली हुई हैं, जैसे समुद्र में बहुत सी नदियां आकर मिल जाती हैं, उसी तरह से वे पार्टियां इसमें आकर मिल गई हैं। इस समुद्र में मिलने से पहले उनकी जितनी आइडयोलाजीज थीं, जैसे सोशलिस्ट पार्टी थी, कांग्रेस पार्टी के हमारे मित्र भी थे, दूसरे लोग थे, वे सब अपनी-अपनी आइडयोलोजीज को भूल गईं। कम से कम हम यह उम्मीद तो नहीं कर रहे थे कि सोशलिस्ट पार्टी वहां मिलने के बाद इस तरह का कैपिटलिस्टिक बजट पेश करेगी। यह बहुत ताज्जुब की बात है। न सिर्फ मुझे बल्कि मेरी पार्टी को, पूरे हिन्दुस्तान की गरीब जनता को इससे बहुत निराश हुई है। लेकिन ये लोग इस बात को नहीं समझते हैं। कल पटनायक साहब ने यहां भी भाषण दिया था और राज्य सभा में भी भाषण दिया था। यहां भाषण देते हुए उन्होंने कहा था—चूंकि पटेल साहब कुछ नहीं बोल सकते, उनमें इतनी ताकत नहीं है, कूव्वत नहीं है कि. सुब्रह्मण्यम साहब का जवाब दे सकें, इसलिये मुझे इस डिबेट में इटरवीन करना पड़ा है। उन का पूरा भाषण बजट के ऊपर नहीं था, सिर्फ सुब्रह्मण्यम साहब के खिलाफ अटेक था। हर सेन्टेंस में वह सुब्रह्मण्यम-सुब्रह्मण्यम कहते रहे और खत्म भी उन्होंने सुब्रह्मण्यम साहब के नाम से किया। वह इस वक्त यहां मौजूद नहीं हैं, अगर होते तो ज्यादा अच्छा था।

[अध्यक्ष जी, जनता पार्टी में जाने से पहले जो लोग कांग्रेस पार्टी में थे—जैसे हमारे प्रधान मंत्री जी, जो 23 साल तक कांग्रेस पार्टी में रहे, इसी में पैदा हुए, इसमें फले फूले, मुख्य मंत्री रहे, सेन्टर में बड़े-बड़े पोर्टफोलियोज उन्होंने होल्ड किये, डिप्टी प्राइम मिनिस्टर